राबर्ट नर्सिंग होम में

कल तक जिनका अतिथि था, आज उनका परिचारक हो गया; क्योंकि मेरी अतिथेया अचानक रोग की लपेट में आ गयीं और उन्हें इंदौर के राबर्ट नर्सिंग होम में लाना पड़ा।

यह है सितंबर 1951 !

रोग का आघात पूरे वेग में, परिणाम कँपकँपाता और वातावरण चिंता से घिरा-घेरा कि हम सब सुस्त। तभी मैंने चौंककर देखा कि अपने विशिष्ट धवल वेष में आच्छादित एक नारी कमरे में आ गयी है।

देह उनकी कोई पैंतालीस वसंत देखी, वर्ण हिम-श्वेत, पर अरुणोदय की रेखाओं से अनुरंजित, कद लंबा और सुता-सधा। "लंबा मुँह अच्छा नहीं लगता, बीमार के पास लंबा मुँह नहीं।" आते ही उन्होंने कहा। भाषा सुधरी, उच्चारण साफ और स्वर आदेश का, पर आदेश न अधिनायक का, न अधिकारी का, पूर्णतया माँ का, जिसका आरंभ होता है शिकंजे से और अंत गोद में। हाँ, वह माँ ही थी होम की अध्यक्षा मदर टेरेजा, मातृभूमि जिसकी फ्रांस और कर्मभूमि भारत। उभरती तरुणायी से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में लवलीन; यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव, और बस यही यही।

उन्होंने रोगी के दोनों म्लान कपोल अपने चाँदनी चर्चित हाथों से थपथपाये तो उसके सूखे अधरों पर चाँदी की एक रेखा खिंच आयी और मुझे लगा कि वातावरण का तनाव कुछ कम हो गया।

तभी एक खटाक और हमारा डॉक्टर कमरे के भीतर। मदर ने उसे देखते ही कहा, "डॉक्टर, तुम्हारा बीमार हँस रहा है।" "हाँ, मदर! तुम हँसी बिखेरती जो हो।" डॉक्टर ने अपने जाने कितने अनुभव यों एक ही वाक्य में गूँथ दिये।

मैंने भावना से अभिभूत हो सोचा- जो बिना प्रसव किये ही माँ बन सकती है, वही तीस रुपये मासिक के योग-क्षेम पर बीस वर्ष के दिन और रात सेवा में लगा सकती है और वही पीड़ितों के तड़पते जीवन में हँसी बिखेर सकती है।

तीसरे पहर का समय, थर्मामीटर हाथ में लिये यह आयीं मदर टेरेजा और उनके साथ एक नवयुवती, उसी विशिष्ट धवल वेष में, गौर और आकर्षक। हाँ, गौर और आकर्षक, पर उसके स्वरूप का चित्रण करने में ये दोनों ही शब्द असफल। यों कहकर उसके आस-पास

आ पाऊँगा कि शायद चाँदनी को दूध में घोलकर ब्रह्मा ने उसका निर्माण किया हो। रूप और स्वरूप का एक दैवी साँचा-सी वह लड़की। नाम उसका क्रिस्ट हैल्ड और जन्म-भूमि जर्मनी।

फ्रांस की पुत्री मदर टेरेजा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ, एक रूप, एक ध्येय, एक रस।

"तुम्हारा देश महान् है, जो युद्ध के देवता हिटलर को भी जन्म दे सकता है और तुम्हारे जैसी सेवाशील बालिका को भी।" मैंने उससे कहा, तो दर्प से दीप्त हो वह स्टैच्यू हो गयी और अपना दाहिना पैर पृथ्वी पर वेग से ठोंक कर बोली- "यस यस।" वह दूसरे कमरे में चली गयी, तो मदर टेरेजा को टटोला, "आप इस जर्मन लड़की के साथ प्यार से रहती हैं?" बोलीं, "हाँ, वह भी ईश्वर के लिए काम करती है और में भी, फिर प्यार क्यों न हो?" मैंने नश्तर चुभाया -"पर फ्रांस को हिटलर ने पददलित किया था, यह आप कैसे भूल सकती हैं?"

नश्तर तेज था, चुभन गहरी पर मदर का कलेजा उससे अछूता रहा। बोलीं "हिटलर बुरा था, उसने लड़ाई छेड़ी पर उससे इस लड़की का भी घर ढह गया और मेरा भी, हम दोनों एक।" 'हम दोनों एक' मदर टेरेजा ने झूम में इतने गहरे डूबकर कहा कि जैसे मैं उनसे उनकी लड़की को छीन रहा था और उन्होंने पहले ही दाँव में मुझे चारों खाने दे मारा। मदर चली गयीं, मैं सोचता रहा मनुष्य-मनुष्य के बीच मनुष्य ने ही कितनी दीवारें खड़ी की हैं-ऊँची दीवारें, मजबूत फौलादी दीवारें, भूगोल की दीवारें, जाति-वर्ग की दीवारें, कितनी मनहूस, कितनी नगण्य, पर कितनी अजेय ! क्रिस्ट हैल्ड के पिता जर्मनी में एक कालेज के प्रिंसिपल हैं और उसने अभी पाँच वर्षों के लिए ही सेवा का व्रत लिया है। रोगिणी के गहरे काले बाल देखकर उसने कहा, "तुम्हारे काले बाल मेरे पिता के से हैं।" कहा कि वह स्मृतियों में खो सी गयी। मुझे लगा कि मैं ही क्रिस्ट हैल्ड हूँ। अपने माता-पिता से हजारों मील दूर, एक अजनबी देश में, अकेली, खोयी, छली- सी और मेरी आँखें भर आयीं। लड़की मेरे आँसुओं में डूब-डूब गयी और किनारा पाने को उसने जल्दी से उन्हें अपने रूमाल से पोंछ दिया। उसकी सदा हँसती आँखें सम हो नरम हो आयीं, पर जरा भी नम नहीं। मैंने पूछा, "घर से चलते समय रोयी थीं तुम?" उसका भोला उत्तर था, "ना, माँ बहुत रोयी थी।"

फटी आँखों कुछ देर मैं उसे देखता रहा, तब कुछ बिस्किट उसे भेंट किये। बोली "धन्यवाद, थैंक यू, तांग शू।" वह अकसर हिन्दी-अंग्रेजी-जर्मन भाषाओं के शब्द मिलाकर बोलती है।

हम सब हँस पड़े और वह हँसती-हँसती भाग गयी।

मदर टेरेजा बातों के मूड में थीं। मैंने उनके हृदय मानस में चोर दरवाजे से झाँका "मदर घर से आने के बाद फिर आप घर नहीं गयीं? कभी मिलने-जुलने भी नहीं।" कान अपना काम कर चुके थे, वाणी को अपना काम करना था, पर मदर ने उसकी राह मोड़ दी और तब मैंने सुनी यह कहानी।

कई वर्ष हुए फ्रांस में विश्व-भर के पूजा-गृहों का एक सम्मेलन हुआ। भारत की दो मदर भी प्रतिनिधि होकर उस सम्मेलन में गयीं। वे फ्रांस की ही थीं, उनके माता-पिता फ्रांस में ही थे। उन्हें पता था कि बरसों बाद हमारी पुत्रियाँ आ रही हैं। दोनों माताएँ अपनी पुत्रियों का स्वागत करने जहाज पर आयीं, पर विचित्र बात यह हुई कि वे दोनों अपनी पुत्रियों को पहचान न पायीं और आपस में कहती रहीं कि तुम्हारी बेटी कौन-सी है। अंत में उनका नाम पूछा और तब गले मिलीं। कहानी पूरी हुई तो कई प्रश्न उठे पर मदर टेरेजा उठते न उठते भाग गयीं। निश्चय ही उन दोनों अनपहचानी पुत्रियों में से एक वे स्वयं थीं।

बस, इतना ही एक दिन मैं उनसे और कहला सका।

"घर से बहुत चिट्ठी आती है तो मैं यहाँ के किसी स्थान का फोटो भेज देती हूँ।"

रोग पूरे उभार पर था, रोगी के लिए असह्य। मदर टेरेजा ने कहा, "तुम्हारे लिए आज विनती करूंगी।" उनका चेहरा उस समय भक्त की श्रद्धा से प्रोद्भासित हो उठा था।

रोगी ने कहा, "कल भी करना मदर।" मदर के स्वर में मिश्री ही मिश्री पर मिश्री कूजे की थी जो मिठास तो तुरन्त देती थी, पर घुलती तुरन्त नहीं और बल का प्रयोग हो तो मसूड़े तक को छील देती है। बोली, "ना कल उसके लिए करूंगी, जिसे सबसे अधिक कष्ट होगा।" जैसे हजार वाट का बल्ब मेरी आँखों में कौंध गया।

मैंने बहुतों को रूप से पाते देखा था, वहुतों को धन से और गुणों से भी बहुतों को पाते देखा था, पर मानवता के आँगन में समर्पण और प्राप्ति का यह अद्भुत सौम्य स्वरूप आज अपनी ही आँखों देखा कि कोई अपनी पीड़ा से किसी को पाये और किसी का उत्सर्ग सदा किसी की पीड़ा के लिए ही सुरक्षित रहे।

ऊपर के बरामदे में खड़े-खड़े मैंने एक जादू की पुड़िया देखी- जीती जागती जादू की पुड़िया। आदमियों को मक्खी बनानेवाला कामरूप का जादू नहीं मक्खियों को आदमी बनानेवाला जीवन का जादू- होम की सबसे बुढ़िया मदर मारिट। कद इतना नाटा कि उन्हें गुड़िया कहा जा सके, पर उनकी चाल में गजब की चुस्ती, कदम में फुर्ती और व्यवहार में

मस्ती, हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी और काम यों कि मशीन मात माने। भारत में चालीस वर्षों से सेवा में रसलीन जैसे और कुछ उन्हें जीवन में अब जानना भी तो नहीं। आपरेशन के लिए एक रोगी आया, ऐश-आराम में पला जीवन। कहने की बेचारे को आदत, सहने का उसे क्या पता, पर कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है? "मदर मर जाऊँगा", उसने विह्वल होकर कहा। वातावरण चीत्कार की विह्वलता से भर गया, पर बूढ़ी मदर की हँसी के दीपक ने झपकी तक नहीं खायी। बोली, "कुछ नहीं, कुछ नहीं, आज है एवरीथिंग (सब-कुछ), कल समथिंग (कुछ-कुछ) और बस तव नथिंग (कुछ नहीं)" और वे इतने जोर से खिलखिलाकर हँसी कि आस-पास कोई होता तो झेंप जाता।
एक रोगी उन्होंने देखा - चिंता के गर्त से उठ उभरती रोगिणी। जोर से चुटकियाँ बजाकर वे किलकीं-जि-उती, जि-उती। यह है उनका जी उठी, जी उठी।

यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी है वह उतनी ही अधिक उत्फुल्ल, मुसकानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शी जीवन की! सेवा-निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की। भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का तबादला हो गया- अब वह धानी के भील सेवा केन्द्र में काम करेगी। ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका, पर कर्पूरिका तो अपने सौरभ में इतनी लीन है कि उसे स्वर्ग के अतिरिक्त और कुछ दीखता ही नहीं, सूझता ही नहीं।

वह हम लोगों को मिलने आयी हँसती, खिलती, बिखरती और फुदकती। यहाँ से जाने का उसे विषाद नहीं, एक-एक नयी जगह देखने का भाव उसके रोम-रोम में, पर मुझे उसका जाना कचोट-सा रहा था वह दूसरे रोगियों से मिलने चली गयी।
इधर-उधर आते-जाते वह दो-तीन बार कमरे के बाहर से निकली, पर फिर एक वार भी उसने उधर नहीं झाँका। मैंने अपने से कहा, "कोई लाख उलझे, उसे किसी में नहीं उलझना है।"
और तब सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का, सच यह है कि सिस्टर मदर वर्ग का निस्संग निर्लिप्त, निर्द्वन्द्व जीवन पूरी तरह मेरे मानस चक्षुओं में समा गया और फिर मैंने आप ही आप कहा- 'सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड, हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुई।'

-कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'